साहित्योत्सव 2015
9-14 मार्च
साहित्य अकादेमी
दैनिक समाचार बुलेटिन
बुधवार, 11 मार्च 2015

आज के कार्यक्रम

आमने-सामने
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 से सम्मानित लेखकों से प्रख्यात विद्वानों की बातचीत
पूर्वाह्न 10.00 बजे,
मेघदूत III

युवा साहिती
युवा लेखक सम्मिलन
नई फ़सल
पूर्वाह्न 10:45 बजे
रवींद्र भवन परिसर

सांस्कृतिक कार्यक्रम
गीता चंद्रन
द्वारा
भरतनाट्यम नृत्य
सायं 6.30 बजे
मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला

आशीष नंदी द्वारा संवत्सर व्याख्यान

प्रख्यात समालोचक, सामाजिक, सिद्धांतवादी, राजनीतिक मनोविश्लेषक डॉ. आशीष नंदी ने आज 10 मार्च 2015 को रवीन्द्र भवन परिसर में संवत्सर व्याख्यान दिया। व्याख्यान का विषय था -- 'क्या हम सांस्कृतिक विविधता की रक्षा करते हैं अथवा सांस्कृतिक विविधता हमारी रक्षा करती है?-- हमारे समय में संस्कृति की राजनीति'। उन्होंने कहा कि समय, क्षेत्र और समुदायों के साथ मूल्य परिवर्तित होते हैं। किसी भी समाज में मूल्यों के परिवर्तित होने से विरोधाभास भी जन्म लेते हैं। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विविधता पर विभिन्न स्रोतों द्वारा प्रहार किए जाते हैं और वे ऐसे स्रोतों की सूची बना रहे हैं। डॉ. नंदी ने विकास को भी सांस्कृतिक विविधता पर आक्रमण का एक स्रोत माना। धर्म जिसे कि प्रायः क्षेत्र द्वारा परिभाषित किया जाता है; भाषा और स्थानीय रीति-रिवाज़ विश्वभर में सांस्कृतिक विविधता पर आक्रमण के तीसरे स्रोत हैं। क्योंकि धर्म जीवंतता को नष्ट करता है और बड़े परिमाण में सांस्कृतिक विविधता को प्रभावित करता है और स्वतंत्रता से वंचित रखता है। उन्होंने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि इन धार्मिक भावनाओं के कारण ही हम सांस्कृतिक समुदायों और अस्मिताओं से तेज़ी से हाथ धो रहे हैं। डॉ. नंदी का मानना था कि राष्ट्र-राज्य भी सांस्कृतिक विविधता पर प्रहार के प्रभावी स्रोत हैं; साथ ही संस्कृति के उन अंगों को अस्वीकृत करने की मानसिकता, जो बिकाऊ नहीं है, इक्कीसवीं सदी में सांस्कृतिक विविधता पर आक्रमण का मुख्य स्रोत है।

व्याख्यान के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. नंदी का स्वागत किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने डॉ. आशीष नंदी का पुष्पगुच्छ से अभिनंदन किया।

लेखक सम्मिलन

लेखकों ने साझा किए अपने रचनात्मक अनुभव

बर्ष 2014 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को श्रोताओं से साझा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार ने की।

असमिया लेखिका अरूपा पंतगीया कलिता ने कहा कि उन्हें लोगों के जीवन में दुःख और निराशा ने हमेशा परेशान किया और उन्होंने उन लोगों पर लिखा जो अपने जीवन में सामान्य चीज़ों से भी वंचित हैं।

बोडो लेखक उर्खाव गोरा ब्रह्म ने कहा, मैं अपने लेखन में पत्रकारिता के ढाँचे का इस्तेमाल करता हूँ, जिसका उद्देश्य दुनिया या समाज के समक्ष अपनी कहानी प्रस्तुत करना होता है।

हिंदी के पुरस्कृत लेखक रमेशचंद्र शाह ने कहा कि लिखना मेरे लिए साँस लेने की तरह अनिवार्य कर्म है। अर्थहीनता और मूल्य वंचना के इस घटाटोप से जूझे बिना न साहित्य का भला होगा, न साहित्यकार का। साहित्य समग्र अस्तित्व की चिंता करता है।

मैथिली के लिए पुरस्कृत आशा मिश्र ने अपने उपन्यास *उचाट* के बारे में बताते हुए कहा कि मेरी यह कृति खोए हुए बच्चों या किसी कारणवश अपने माँ-बाप से बिछुड़ गए बच्चों पर केंद्रित है।

पंजाबी लेखक जसविंदर ने कहा कि मेरे अंदर जितनी भी संवेदना है, वह मेरी मरहूम माँ की ख्वाहिश है। यही कारण है मैं कविता की ओर अग्रसर हुआ।

राजपाल सिंह राजपुरोहित (राजस्थानी) ने कहा कि मैं यह दिखावा नहीं करता कि इस उम्र में पुरस्कार से मुझे विशेष प्रसन्नता नहीं हुई बल्कि यह स्वीकार करता हूँ कि इस निर्णय से मेरा मन एवं आत्मा झूम उठी है।

तेलुगु के लिए पुरस्कृत राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी ने कहा एक साहित्यक समालोचक के रूप में उनका विश्वास है कि साहित्य कलात्मक तथा सामाजिक यथार्थ का समालोचनात्मक प्रतिविंब होना चाहिए।

डोगरी के लिए पुरस्कृत शैलेंद्र सिंह ने अपने पुरस्कृत उपन्यास *हाशिये पर* के कथानक और रचना प्रक्रिया के बारे में बताया।

कन्नड के लिए पुरस्कृत जी.एच. नायक ने कहा कि अगर कोई आलोचक सच्चे स्वर में अपनी बात कहना चाहता है तो उसके समक्ष कई तरह की चुनौतियाँ एवं कठिनाइयाँ सामने आती हैं।

कश्मीरी के लिए पुरस्कृत शाद रमज़ान ने कश्मीरी और संस्कृत के महान रचनाकारों का उल्लेख किया और सूफी परंपरा को भी संदर्भित किया। उन्होंने माँग की कि कश्मीरी को क्लासिकल भाषा का दर्ज़ा दिया जाना चाहिए।

नेपाली के लिए पुरस्कृत नंद हाङखिम ने कहा कि कोई भी सर्जनात्मक कला प्रकृति, प्रदेश और जीवन से दूर नहीं जा सकती। सृजनात्मक कला न केवल एक विशेष देश और काल के समय को चित्रित करती है बल्कि एक तरह का बोध भी प्रदान करती है।

ओड़िया के लिए पुरस्कृत गोपालकृष्ण रथ ने कहा कि अपने कविता संकलनों में वे अपने जीवनानुभव के प्रति पूरी तरह सत्यनिठ हैं।

संस्कृत के लिए पुरस्कृत प्रभुनाथ द्विवेदी ने कहा कि यह पुरस्कार मिलने से मेरा दायित्त्व लोक और साहित्य के प्रति पहले से अधिक बढ़ गया है।

मलयाळम् के लिए पुरस्कृत सुभाष चंद्रन ने कहा कि मेरा विश्वास है कि हमारे महान बुद्धिजीवियों ने विभिन्न कालखंडों में आलोक के जो बीज बोए हैं वे अंधकार एक दूसरे युग में हम जैसे नए लेखकों के रूप में उगेंगे।

मणिपुरी के लिए पुरस्कृत नाओरेम विद्यासागर सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में कविता लिखना एक कठिन कार्य है। किसी की अनुभूतियों और विचारों की अभिव्यक्ति ही पर्याप्त नहीं है।

सिन्धी के लिए पुरस्कृत गोप कमल ने कहा कि उन्होंने गद्य के कई साहित्यिक रूपों को लेकर प्रयोग किए लेकिन ग़ज़ल विधा में वे अपने को सहज महसूस करते हैं।

उर्दू के लिए पुरस्कृत लोकप्रिय शायर मुनव्वर राना ने कहा कि रचनाकारों को पुरस्कार जवानी में ही मिल जाने चाहिए; क्योंकि जो लेखक 40 साल में अच्छा लिख रहा है, वह अंत में भी अच्छा ही लिखेगा। इससे पुरस्कृत लेखक को और अच्छा और बेहतर लिखने की प्रेरणा मिलेगी।

कार्यक्रम का सफल संचालन दिनेश मिश्र ने किया

खुला मंच : मीडिया के साथ पुरस्कृत लेखकों की बातचीत

मीडिया से पुरस्कृत रचनाकारों से सीधी बातचीत के लिए आयोजित खुले सत्र में पत्रकारों/लेखकों और पाठकों ने पुरस्कृत लेखकों से साहित्य, समाज, सत्ता और मीडिया के संबंधों को लेकर विभिन्न तरह के सवाल किए। आई.एन.एस. न्यूज एजेंसी से आई शिल्पा रैना ने हाल ही में दक्षिण भारत में दो लेखकों के साथ हुई घटनाओं को संदर्भित करते हुए सवाल पूछा कि ऐसे में लेखक अपनी बात क्या खुले तरीके से रख पाएँगे।

इसके जवाब में डोगरी में पुरस्कृत लेखक शैलेन्द्र सिंह ने जो पुलिस सेवा में हैं, कहा कि सरकार में रहते हुए सरकार का विरोध करना मुश्किल काम है, लेकिन फिर भी मैं जो कहना चाहता हूँ उसे अपने पात्रों के जरिए से कह पाता हूँ।

असमिया लेखक अरूपा पंतगीया कलिता ने कहा कि प्रकाशक आजकल लेखक से अपनी शर्तों पर लिखवाना चाहते हैं जो कि चटपटा और लोकप्रिय हो। लेकिन हम लेखकों को ही यह तय करना होगा कि हमें किसके साथ होना है।

कहानीकार अशोक गुप्ता द्वारा पूछे गए प्रश्न कि साहित्यकार अभी केवल समस्याओं को छू भर रहे हैं, समाधान की कोई बात नहीं हो रही, इसका जवाब देते हुए ओड़िया रचनाकार श्री गोपाल कृष्ण रथ ने कहा कि पत्रकारिता और साहित्य में एक सीमा रेखा है। पत्रकारिता समस्याओं के हल के बारे में सोचती है, किंतु लेखक को लिखते समय रचना की पठनीयता और पाठकों के रुचि का भी ध्यान रखना होता है। रणजीत साहा के इस सवाल पर कि लेखकों और प्रकाशकों को पाठकों के बारे में भी कुछ सोचना चाहिए, प्रख्यात मराठी लेखक भालचंद्र नेमाडे ने कहा कि यह सचमुच चिंतनीय है कि आज लेखकों ने अपने-अपने खेमे बना लिए हैं जिसके चलते सहृदय पाठक को भी संदिग्ध नज़रों से देखा जाने लगा है।

प्रो. एस.एल. भैरप्पा तथा डॉ. सी. नारायण रेड्डी को अकादेमी की महत्तर सदस्यता

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद ने सोमवार, 9 मार्च 2015 को आयोजित अपनी बैठक में प्रख्यात कन्नड लेखक प्रो. एस.एल. भैरप्पा तथा प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. सी. नारायण रेड्डी का चयन महत्तर सदस्य के रूप में किया गया।

प्रो. एस.एल. भैरप्पा वरिष्ठ आधुनिक भारतीय लेखकों में से एक हैं। अपने पाँच दशकों के लेखकीय सफ़र में आपने 25 उपन्यास, आत्मकथा तथा दर्शनशास्त्र की 5 पुस्तकें लिखीं। आपके उपन्यासों के अंग्रेज़ी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हुए हैं। आपकी कृतियों पर कई फ़िल्में भी बनीं, जिन्हें पर्याप्त सराहना मिली। आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार, कन्नड साहित्य अकादेमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान, पम्प पुरस्कार, एन.टी.आर. राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मान, गुलबर्ग विश्वविद्यालय की मानद वाचस्पति उपाधि आदि से सम्मानित किया गया।

डॉ. सी. नारायण रेड्डी जाने-माने तेलुगु कवि तथा शैक्षिक प्रशासक हैं। आपको अगस्त 1997 में राज्य सभा के लिए नामित किया गया था। डॉ. रेड्डी की कविता में मानवता, आशा तथा जनकल्याण जैसे सार्वभौमिक मूल्य समाहित हैं। आपने तेलुगु फिल्मों के लिए हज़ारों गीत लिखे हैं। आपको 1988 में ज्ञानपीठ सम्मान और 1973 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

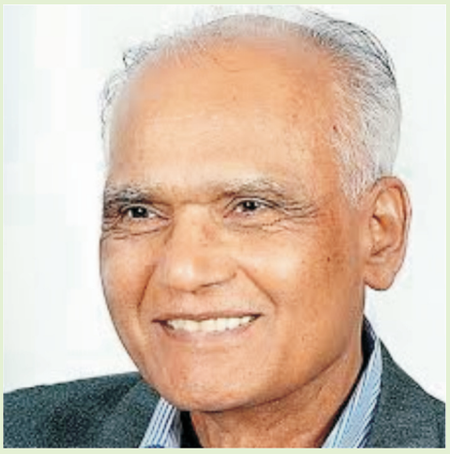

आपको सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1982), भारत सरकार द्वारा पद्मश्री (1977) तथा पद्म विभूषण (1992) से भी अलंकृत किया गया।

आगामी कार्यक्रम

12 मार्च 2015 : भारत की अलिखित भाषाएँ विषयक परिसंवाद, रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.00 बजे
स्थापना दिवस व्याख्यान : प्रख्यात कन्नड लेखक एस.एल. भैरप्पा द्वारा, रवींद्र भवन परिसर : सायं 6.00 बजे

12-14 मार्च 2015 : 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक **राष्ट्रीय संगोष्ठी**
साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल : पूर्वाह्न 10.00 बजे

13 मार्च 2015 : पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : राजस्थानी लोक गायन, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला : सायं 6.30 बजे

14 मार्च 2015 : बाल साहिती : आओ कहानी बुनें : बाल साहित्य से संबंधित दिन भर का कार्यक्रम,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली-110001, दूरभाषः 011-23386626-28

DD NATIONAL
Media Partner

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रति दिन पूर्वाह्न 10 से सायं 7.00 बजे तक
रवींद्र भवन परिसर

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
दूरभाष : +91 11 23386626-28, फ़ैक्स : +91 11 23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in, वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in